साठोत्तरी हिन्दी व्यंग्य उपन्यास : भाषा

मीणा देवकी एन.
शोधछात्रा,
सरदार पटेल विश्वविद्यालय,
वल्लभ विद्यानगर

भाषा मानव जीवन का एक अनिवार्य अंग है । भाषा के माध्यम से ही मनुष्य अपने मानव समाज में विचार-विनिमय करता है । भाषा का हमारे साहित्य में भी महत्वपूर्ण स्थान है । प्रत्येक साहित्यकार अपनी भाषा के कारण भी साहित्य में विशेष स्थान रखता है । भाषा के बिना कोई भी साहित्यकार साहित्य की रचना नहीं कर पाता । साहित्यकार अपने भावों, विचारों, अनुभवों तथा अनुभूतियों की पूर्ण अभिव्यक्ति करने के लिए भाषा शक्ति का सहारा लेता है । भावाभिव्यक्ति का यह साधन (भाषा) जिस साहित्यकार का जीतना सशक्त होगा, उसकी रचना भी उतनी ही सफल और सशक्त होगी ।

साहित्य की सर्वश्रेष्ठ विधा उपन्यास के लिए भी भाषा एक अनिवार्य तत्व हैं । जिस प्रकार कथावस्तु-चरित्रचित्रण, परिवेश योजना... ये सभी उपन्यास रूपी देह के विभिन्न अंग है तो भाषा शैली उस उपन्यास रूपी देह की आत्मा । उपन्यास के अंतर्गत एक अच्छा साहित्यकार अपने अनुभवों, विचारों, भावों को एक विशिष्ट भाषा शैली के माध्यम से एक विशिष्ट आकार प्रदान करता है । अपने प्रारंभिक काल में उपन्यास मात्र मन बहलाव के साहित्य में अपना स्थान रखते थे । परंतु शनै-शनै इस विधा के स्वरूप में बदलाव आया । बाद में उपन्यासकारों ने देश में चारों ओर फैली सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक.. समस्याओं को अपने उपन्यास का विषय बनाया । सन् १९६० के पश्चात् साठोत्तरी काल में समाज फैली विसंगतियों, कुण्ठाओं,

अंधविश्वास... आदि को यथार्थ रुप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए व्यंग्यभाषा को माध्यम बनाया । साठोत्तरी व्यंग्य उपन्यास साहित्य व्यक्ति तथा जीवन में व्याप्त विभिन्न विसंगतियों, परिवेशगत विड़म्बनाओं एवं विषमताओं का पर्दाफास करता है अत: निस्संदेह उसकी भाषा सुललित, कोमलकांत, प्रसादगुण युक्त तथा चमत्कारिक नहीं होगी बल्कि व्यंग्यात्मक, कटु, आलोचनात्मक एवं प्रहारक होगी । साठोत्तरी कुछ उपन्यासों में आकर भाषा मात्र आम भाषा न रहकर व्यंग्य भाषा बन जाती है । साठोत्तरी व्यंग्य उपन्यासों की भाषा किसी प्रकार की लागलपेट या झमेले में न पड़कर कथ्य़ के सटीक एवं सशक्त सम्प्रेषण पर अपना ध्यान केन्द्रित रखती है । साथ ही व्यंग्य भाषा को सजने संवरने की फुरसत तक नहीं, पर सीधे शब्दों में अपनी बात कह जाती है । साठोत्तरी हिन्दी व्यंग्य उपन्यासों की भाषा के शब्द स्वयं ही मानों अपने अर्थ देने लगते हैं, कई बार तो वे अपने वास्तविक अर्थ को भी भूल जाते हैं ।

भाषा की दृष्टि से देखें तो श्रीलाल शुक्ल का 'राग दरबारी' साठोत्तरी हिन्दी व्यंग्य उपन्यासों में एक सशक्त उपन्यास सिद्ध होता है । इस उपन्यास की व्यंग्यात्मक भाषा इस उपन्यास का प्राण है। भाषा के माध्यम से शुक्लजी ने ग्रामीण, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, भ्रष्टाचार को पाठको के समक्ष उकेर कर रख दिया है । उपन्यास में भाषा कितने ही रूप धारण करती है । कभी वह यर्थावादी बनती है, कभी व्यंग्यपूर्ण तो कभी-कभी फिल्मी गीतों की भाषा भी उसमें दिखाई देती है । डॉ. चमनलाल 'राग दरबारी' की भाषा संबंध में लिखते हैं कि -

"उपन्यास की एक ओर बड़ी शक्ति उसकी सृजनात्मक भाषा-शैली है । भाषा का ऐसा सृजनात्मक प्रयोग कम ही रचनाओं में उपबल्ध होता है । उपन्यास की भाषा सरल व प्रांजल खड़ीबोली हिन्दी ही है । लेकिन उसमें देशी-भाषा, मुहावरों का ऐसा कलात्मक प्रयोग हुआ है कि देखते ही बनता है । 'राग दरबारी' की भाषा से ही भाषा शक्ति का स्त्रोत जन सामान्य में होने का आभास मिलता है । वास्तव में भाषा का इतना सृजनात्मक प्रयोग न हो पाता तो लेखक की व्यंग्य शक्ति ही भौथरी हो जाती है । अपने व्यंग्य को लेखक ने भाषा के प्रयोग से ही गहराया है ।"[3]

व्यंग्य के पितामह हरिशंकर परसाईजी के उपन्यास 'रानी नागफनी की कहानी' की भाषा का रूप भी बड़ा ही विलक्षण या अद्भूत है । जो पाठक को झकझोर कर रख देता है । विषयवस्तु का व्यास और शिल्प समास ये दोनों सफल निर्वहन व्यंग्य उपन्यास की एक प्रकार की कसौटी पर खरा उतरता है । परसाईजी की व्यंग्यभाषा के अनूठे दर्शन हमें उनके इस उपन्यास में होते है । इस उपन्यास की भाषा आडंबर पूर्ण नहीं है क्योंकि आडंबर पूर्ण भाषा का प्रयोग यह परसाईजी का साध्य नहीं है । परसाईजी व्यंग्यभाषा के संबंध में अपने विचार स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि-

"एक एक चौपाई के जब कई अर्थ निकलते हैं तो मेरे मन में आता है कि इनसे कहूँ भाई जिसकी बात के एक से अधिक अर्थ निकलें वह संत नहीं, लुच्चा आदमी होता है । संत की बात सीधी और स्पष्ट होती है और उसका एक ही अर्थ निकलता है ।"[2]

साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में राजनीति पर करारा व्यंग्य करता है मन्नू भंडारी रचित व्यंग्य उपन्यास - 'महाभोज' । भंडारीजी के इस उपन्यास की भाषा सीधी और सपाट न होकर सुक्ष्म एवं नुकीली है । उपन्यास में व्यंग्यभाषा के माध्यम से मन्नूजी ने राजनीति में फैले भ्रष्टाचार, विकृतियों, असंगतियों, राजनेताओं के भ्रष्ट आचारण आदि का पर्दाफाश किया है । इनके इस उपन्यास में कहीं कही हमें वर्णनात्मक भाषा का प्रयोग भी हुआ दिखाई देता है । एक उदाहरण निम्न दृष्टव्य है -

"इस बार तो देख लिया सबने की एकता में बड़ा जोर है । तूफ़ानी जोर । तूफान आता है तो बड़े-बड़े पेड़ों को जड़ सहित उखाड़ फेंकता है, जनता एक होती है तो बड़े-बड़े राज्य उलट देती है.... कुर्सी पर बैठना है तो जनता में फूट डालों-जनता की एकता कुर्सी के लिए सबसे बड़ा खतरा है । समझ रहे हैं आप लोग मेरी बात । आप लोग खुद ।"[3]

'सबहिं नचावत राम गोसाईं' की कथा क्रमिक विकास की परिपाटी से भिन्न है । साथ हीं यह एक नवीन शैली में लिखा गया उपन्यास है । वर्माजी की परिवर्ती कृतियों में से भाषाई शिल्प के अद्भूत संतुलन के कारण यह उपन्यास महत्वपूर्ण स्थान रखता है । लेखक की भाषा में अपार

व्यंजना शैली इस उपन्यास में दृष्टिगत होती है । संपूर्ण उपन्यास में एक गहरी व्यंग्यभाषा भारत के पूँजीपति, मंत्री और अधिकारीयों पर व्यक्त है ।

फिल्मी परिवेश पर लिखा गया व्यंग्य उपन्यास है मनोहरश्याम जोशी रचित "कुरु-कुरु स्वाहा" । इस उपन्यास की भाषा व्यंग्य वैविध्य से परिपूर्ण है । इस उपन्यास में अनेक भाषाओं के शब्द देखने को मिलते हैं जोशीजी ने अपने इस उपन्यास में अंग्रेजी भाषा का भी खुब प्रयोग किया है। जगह-जगह पर अंग्रेजी वाक्यों का प्रयोग देखने को मिला है । इन वाक्यों के समावेश से उपन्यास साहित्य में सामर्थ्य परिलक्षित होता है । उपन्यास में अंग्रेजी भाषा का एक उदाहरण निम्न दृष्टव्य है -

"बी विद मी, लुई द सान एंजल, नाव विटनेस बिफोर द टाइड्स कैन रैस्ट अवे, द वर्ड आई ब्रिंग...."[8]

जोशीजी का दूसरा व्यंग्य उपन्यास 'नेताजी कहिन' भी व्यंग्यभाषा का एक उत्तम उदाहरण है । साठोत्तरी अन्य व्यंग्यात्मक उपन्यासों में 'शहर में घूमता आईना' में भी व्यंग्यपूर्ण भाषा का प्रयोग विस्तृत रुप से देखने को मिलता है । घटना, संवाद, संयोजन, भाषा सभी में मानों व्यंग्य ही समाया हो । शिल्पगत नवीन प्रयोगों के कारण अश्कजी ने इस उपन्यास को नया रूप दिया है । आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया रमेश बक्षीजी का 'बैसाखियों वाली इमारत' व्यंग्य भाषा का एक श्रेष्ठ साठोत्तरी हिन्दी व्यंग्य उपन्यास है ।

उपरोक्त साठोत्तरी हिन्दी व्यंग्यात्मक उपन्यासों के अलावा कुछ ओर व्यंग्यात्मक उपन्यासों के नाम भी उल्लेखनीय हैं जिनमें लगता है कि आद्यन्त व्यंग्यभाषा का ही प्रयोग उपन्यासकारों ने किया है जैसे कि - 'एक चूहे की मौत', 'इमरतिया', 'मुरदाघर', 'जंगलतंत्रम्', 'धरती धन न अपना'... आदि । इन सभी व्यंग्यप्रधान साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों की भाषा उनके रूपबंध के अनुसार व्यंग्यात्मकता धारण किए हुए दिखाई देती है ।

संदर्भ

१. चमनलाल : प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यास, हरियाणा साहित्य अकादमी - चंदीगढ, पृ. संख्या ९३।

२. हरिशंकर परसाई : मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, ज्ञान भारती प्रकाशन-दिल्ली, पृ. संख्या ८३ ।

३. मन्नू भंडारी : महाभोज, राधाकृष्ण प्रकाशन-नई दिल्ली-पृ. संख्या ७२ ।

४. मनोहरश्याम जोशी : कुरु-कुरु स्वाहा, राजकमल प्रकाशन-दिल्ली, पृ. संख्या २४ ।